International Journal of Research
Available at http://internationaljournalofresearch.org/
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 05
May 2015

गुलशन मदान की ग़ज़लों में युग–बोध

अंजू

यमुना नगर, हरयाणा

‘गुलशन मदान’ एक ऐसे साहित्यकार है, जिन्होंने लघु कथा, कविता, क्षणिकायें, दोहे और ग़ज़लें लिखि। विविध आयामी प्रतिभा के धनी ‘गुलशन मदान’ जी ने ग़ज़ल के क्षेत्र में जो यश अर्जित किया है उससे ग़ज़ल के क्षेत्र में नए आयाम प्रस्तुत किए है। गुलशन मदान जी के छः ग़ज़ल सग्रहों में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, समाज से जुड़े अनेक मुद्दों को उठाने का प्रयास किया है। आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र और दूरदर्शन केन्द्र जालंधर से आपकी ग़ज़लों का गायन प्रसारित हो चुका है। इन ग़ज़लों को अकाशवाणी व दूरदर्शन के कलाकारों ने गाया है। इनकी ग़ज़लों में कुण्ठा, निराशा, आन्तरिक द्वन्द्व, अजनबीपन, नशा, अराजकता, उभोक्तावाद, गरीबी, महंगाई, निराशा, आन्तरिक बेराजगारी, न्यायापालिका आदि अनेक मुद्दे है, जिन पर अनेक सवाल उठाये गए है। गुलशन मदान की ग़ज़लों में साक्षात रूप से युग बोध समाज से जूड़ी अनेक समस्याओं को उठाया है। सामाजिक व्यवस्था का वर्णन इनकी ग़ज़लों में दिखाई दे जाता है। उदाहरण देखिए:–

जुदा माना घर है हमारा तुम्हारा
मगर इक शहर है हमारा तुम्हारा
ये गलियां, ये कूचे, ये बाजार, सड़के
ये सांझा सफर है हमारा तुम्हारा

सामाजिक सन्दर्भों में युगबोध में गांव से नगरों का पलायन, संयुक्त परिवारों के विघटन, दाम्पत्य सम्बन्धों के बदलते प्रतिमान, नारी की स्थिति में परिवर्तन, युवा पीढ़ी सामाजिका के दोहरे मानदण्ड जैसे विभिन्न विषयों को उठाया है। आर्थिक सन्दर्भो में युगबोध भी गुलशन मदान की ग़ज़लों में दिखाई दे जाता है। इसके बिना वर्तमान दौर में जीवन की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। आधुनिक युगबोध के कारण अर्थ जीवन के केन्द्र में स्थापित हो गया है। व्यवसायिकता बनाम पत्रकारिता का बोध मदान जी की ग़ज़लों में दिखाई देता है।

है घुटन, संत्रास, पीड़ा, बेबसी अखबार में,
अब नही मिलती, कहीं कोई खुशी अखबार में,
सोचकार यह बात ही मैं रोज पढ़ता हूँ इसे
कोई तो अच्छी खबर होती कभी अखबार में।

गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, आदि का वर्णन आर्थिक युग बोध के अन्तर्गत किया गया है। गुलशन मदान जी की ग़ज़लों में तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन किया है। भारतीय राजनीति जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद साम्प्रदायिकता की दलदल में धंसकर दूषित हो गई है। आज के राजनीतिक नेताओं का वर्णन मदान जी ने किया है। भारत की राजनीति में अच्छृखंलता व बिखराव ही बिखराव है। एक उदाहरण देखिए :-

खुद ही रक्षक लुटेरे बने
देश की त्रासदी देखिए

अन्य उदाहरणः-

आज सियासत बिछी हुई शतरंज की बाजी है।
जिसके हर इक चाल में साजिश आकर होती है।

इसके अतिरिक्त राजनैतिक संदर्भों में चुनाओं को पाखण्डो का पिटारा कहा है। इनकी ग़ज़लों में राजनैतिक भ्रष्टाचार, प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थिति, आदि मुद्दों को उठाया है। धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिकता, सभ्यता के सन्दर्भ में भी युगबोध इनकी ग़ज़लों में दिखाया है। धार्मिक युगबोध में अलौकिक सता में आस्था और अनास्था का वर्णन किया गया है। गुलशन जी ने ईश्वर को सर्वशाक्तिमान और सर्वव्यापक मानकार अपनी एक ग़ज़ल में इसका वर्णन किया हैः-

'यूं ही कहते है सब तू लापता है
मुझे हर शै में तू ही दिख रहा है।
है तू ही फूल, तितली और शबनम
कि तू ही चांद, सूरज और हवा है।

धार्मिक रूढ़ियों एवं प्रदर्शन का वर्णन भी इनकी ग़ज़लों में देखने को मिलता है। संस्कृति और सभयता इन दोनों शब्दों का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में हुआ है। सभ्यता समाज की बाहृय अवस्था का नाम है जबकि संस्कृति व्यक्ति के अन्तर के विकास का। पश्चिमी सभयता में हमारे खान-पान, पहनने-ओढने, रंग-ढंग और आचार-विचार को बदल दिया है। पश्चिमी सभ्यता ने हमारी पूरी जीवन पद्धति को ही बदल दिया है।

विदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षण के साथ अंग्रेजी भाषा के प्रति लगाव युवा पीड़ी में बढ़ता ही जा रहा है। देखिएः-

अ-अदब, आ-आदमी का कायदा
आज बच्चों को पढ़ाता कौन है
लब पे 'इंगलिश' गीत है फैले हुए
अब ग़ज़ल को गुनगुनाता कौन है।

पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव युवा पीढ़ी पर अधिक पड़ता है, जिससे आप का युवा अंधेरे में इधर-उधर भटक रहा हैः गुलशन मदान जी ने अपनी ग़ज़लों में इसका वर्णन किया हैः-

दे रहें पुश्तैनी घर को बेचने का मश्विरा
आजकल बच्चे बजुर्गों से सयाने हो गये
अब तो मतलब के ही रिश्तों का जमाना आ गया।
प्यार और उल्फत के सब रिश्ते पुराने हो गये।

आधुनिकता के अन्तर्गत युग की जानकारी ही युगबोध कहलाती है। युगबोध के अन्तर्गत बुद्धि के आधार पर, तर्क के तराजु में तोलकर युग की समझ अथवा युग का परिचय देता है। युगबोध में किसी भी युग की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, परिस्थितियों और प्रवृतियों की सामुहिक जानकारी का वर्णन व अध्ययन किया जाता है।

गुलशन मदान जी एक ऐसे ही युग प्रेरक साहित्यकार है जो अपनी ग़ज़लों के माध्यम से युग-विशेष (प्रेरक) के रूप में उपस्थित हुए है। गुलशन मदान जी की वाणी युग से बंधी रहकर भी कालजयी है। गुलशन मदान जी ने अपने युग के प्रत्येक पहलु सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सभी पर अपनी लेखनी चलाई है। 'गुलशन मदान' जी की ग़ज़लों में युगबोध अपने सम्पूर्ण युग-वैभव के साथ साहित्य की सामग्री बनती है।

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 05
May 2015

संदर्भ सूचीः-

1. गुलशन मदान, कुद कदम फुटपाथ पर, ग़ज़ल नं. 60
2. गुलशन, मदान, धूप के इश्तिहार, पृ.सं. 20
3. डॉ. शशी लैकब, महिला उपन्यास कारों की रचनाओं में वैचारिकता, पृ. सं. 80
4. गुलशन मदान, कतरे में समंदर, पृ.सं. 35
5. शम्भूनाथ पाण्डेय, आधुनिक हिन्दी काव्य में निराशावाद, पृ.स. 15-16
6. डॉ. नीलम गोयल, स्वतन्त्रयोत्तर हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अलगाव, पृ.स. 215
7. गुलशन मदान, कागज की नाव, पृ.स. 32
8. गुलशन मदान, सुलगती रेत पर, पृ.स. 44